ओ३म

श्रीगिरीशपिंगल

जिसको

श्रीयुत विज्ञाति विज्ञ टी. सी. लूइस
साहब बहादुर एम. ए डाइरेक्टर
संयुत प्रदेश आफ़ आगरा
और अवध

और

श्रीमान् बाबू जी. यन. चक्रवर्ती साहबराय बहादुर
एम. ए. यल, यल, बी. इन्स्पेक्टर सेकंड
सर्किलके प्रसन्नतार्थ

मुझ

पं॰ गिरवर सहाय पांडे थर्ड मास्टर हाईस्कूल
उन्नामने बनाया

प्रथम बार १००० } { मूल्य प्रति पुस्तक ।)॥

Gyan Bhaskar Press, Bara Banki 1905.

प्रस्तावना

प्रायः पांच सात वर्षसे मैं देखता चलाआरहा हूँ कि नार्मलस्कूल के विद्यार्थियों को अन्यान्य पुस्तकादि के साथ पिंगल भी पढ़ाया जाता है और उसमें उनकी वार्षिक परीक्षा भी होती है निस्संदेह इस ग्रंथका ऐसी पाठशालाओं में पठन पाठन अत्यावश्यक है परन्तु कोई सुगम उपयोगी पुस्तक हाथ न आने के कारण बिचारे विद्यार्थियों को सुखके पलटे दुख उठाना पड़ता है। क्योंकि उनको प्रतिवर्ष इस पुस्तक के प्रश्नों में नियत नम्बरोंमे निराश होजाना पड़ताहै। अतएव उनके इस दुःसह दुःखसे दुखी मुझ पं०गिरवरसहाय पांडे ने बड़ेही परिश्रमसे इस क्लिष्ट ग्रंथको अतिही सरल व सुगम भाषामें लिखा और गिरीश पिंगल नाम रक्खा उदाहरणभी स्वशक्त्यानुसार श्रोता बक्ताओं के श्रवणानन्ददायक शुद्ध उत्तम और मधुर लिखे जिससे आशा की जातीहै कि सुजन समाज

में आदर प्राप्ति कर यह मेरी पुस्तक मेरे परिश्रम को सफल करैगी ॥

कोटिशः धन्यवाद है श्रीयुत पं० बटुकनाथजी संस्कृताध्यापक नार्मल स्कूल इलाहाबाद को कि जिन्होंने इस मेरी पुस्तक के शुद्ध करने में मुझे सहायता दी ॥

सर्वसाधारण सम्मतिसूचनायें सादरस्वीकृतहोंगी।

गिरवरसहायपांडे (गिरीश)

अकबरपुर

फ़र्रुखाबाद



ओ३म्

श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीगिरीश पिंगल

प्रथम भाग

छन्दोनिरूपण

वह वाक्य समूह जो किसी विशेष नियम के अनुसार कहा होता है और जिस से किसी प्रकार के राग की ध्वनि भी प्रकट होतीहै छंद कहलाता है।

छन्द रचना के नियमों में मात्रा व वर्ण का विचार किया जाता है जिनको पृथक २ मात्रा वृत्त व वर्णवृत्त कहते हैं।

वर्ण दो प्रकार के हैं।

१-(।) लघु अर्थात् एक मात्रा वाले।

२--(ऽ) गुरु अर्थात् दो मात्रा वाले।

निम्न लिखित लघु गुरु समझे जातेहैं

१--अनुस्वार व विसर्ग से युक्त।

२--श्लोक के पाद के अन्त वाले विकल्प से।

३--संयोग के पूर्व वाले।

निम्न लिखित गुरु लघु कहे जातेहैं।

१--जिसके लघु उच्चारण करने में काव्य की ध्वनि अति आनन्ददायक होती हो उस गुरु को लघुही पढ़ना अच्छा होता है।

२--हिन्दी में जब संयुक्ताक्षर दूसरे शब्द में रहता है तब बहुधा संयोग के पूर्ववाले लघु लघुही पढ़े जाते हैं।

वर्णवृत्त में आठ गण होते हैं और प्रत्येक गणमें तीन२ वर्ण होते हैं जैसा कि निम्न लिखित चित्र से ज्ञात होगा—⊛

४--ढगण--यह ३ मात्राका होताहै और इसके ३ भेद होतेहैं।

५--णगण--यह २ मात्राका होताहै और इसके २ भेद होतेहैं।

छन्दोंके सम्यकज्ञानके हेतु निम्नलिखितप्रत्ययों का जानना अतिही आवश्यक है।

१ प्रस्ताव अर्थात् फैलाव--एकही संख्या के वर्ण अथवा मात्राओंको फैलाकर यह जानना कि उतने वर्ण अथवा मात्राओंको उलट पलट कर कितने और कौन २ रूप बनासक्ते हैं॥

२--उद्दिष्ट अर्थात् प्रस्तारके किसी ज्ञातरूपमे उसरूपके स्थानकी संख्या जाना।

३--नष्ट अर्थात् प्रस्तारके रूपके स्थानकी संख्या जानकर उस रूपको निकालना।

रगण अग्नि सुरमध्य लघु अंगदाह फल होत।
जगण भानु बुध मध्यगण भय दुख रोग उदोत॥ २॥
सगण अन्तगुरु बायु यम देव कहे करि भेव।
उच्चाटन देशहु अटन और मृत्यु गानिलेव॥ ३॥

४--मेरु अर्थात् प्रस्तार के सम लघु गुरु संख्या के रूपोंकी संख्या का पृथक् २ दरशाना।

५--पताका अर्थात् मेरुके अनुसार बताये हुये रूपोंके स्थानकी संख्याका बतलाना।

६--मर्कटी अर्थात् प्रस्तारकी कला लघु और गुरुओंकी संख्या वर्णोंकी संख्या आदि व अन्त वाले गुरु व लघुके भेदोंकी संख्या गुरु व लघुकी मात्रा का प्रमाण और पिंड ज्ञात करना।

तगण अन्तलघु गगन सुर फलविहीन लखु याहि।
नगण नाग त्रय लघु कहे सुख सुबुद्धि फल जाहि॥ ४ ॥
भगणआदि गुरु कहत कवि शशि सुदेवता भास।
यश मंगल पुनि लाभ शुचि कीरति करत प्रकास॥ ५ ॥

दो०। दीजो भूलि न छन्दके आदि झ ह र भ ष कोय।
दग्धाक्षर के दोषते छन्ददोष युत होय॥ १ ॥
मंगल सुर बाची शबद गुरु होवै पुनि आदि।
दग्धाक्षर को दोष नहिं अरु गण दोषहु बादि॥ २ ॥

प्रस्तारके विषयमें*

मात्रा प्रस्तार

१--सबसे पहिली पंक्तिमें सब गुरुही गुरु लिखो परंतु यदि गण विषम मात्राओंका होवै तो लघु को सबसे पहिले लिखकर उसके उपरान्त सब गुरुओंको लिखो ॥

इस प्रकारसे जब पहिली पंक्ति पूरी होजावे तब किसी अन्यपत्रपर इस रूपको उतारलो और द्वितीय नियम को काम में लाओ ॥

---

*निम्नलिखित मात्रा प्रस्तारकी रीति पं॰ वटुकनाथ नार्मल स्कूल इलाहाबादसे प्राप्तहुई ।

आदि गुरुके नीचे लघु लिखकर दाहिनी ओरकी मात्राओं को वैसाही उतारलो जितनी मात्रा कमहों उनके स्थानमें इस रीति से लिखो कि यदि एक की कमीहै तो एक लघु, दो की कमी है तो एक गुरु, दोसे अधिक है तो दो से भागदेकर जितना लब्धहो उतने गुरु लिखकर शेष एक लघु लिखदो ॥

वर्णप्रस्तारमें दाहिनी ओर वैसाही उतारलो बाईओर जितनी कमी हो उतने गुरु लिखदो इसीप्रकार करते जाओ ॥

२--सबसे पहिला जो गुरु है उसके पीछे एक लघु और लिख दो।

अब जो मात्राओं को गिनते हैं तो एक अधिक होती है इस दोष के दूर करने के हेतु तृतीय नियम का ध्यान रखना बड़ाही सुखदाई होता है॥

३--लघु के बढ़ाने से जो अशुद्ध रूप उत्पन्न हो उसमें देखो कि सबसे पहिले गुरु है या लघु यदि गुरु है तो उसको लघु करदो और जो लघुही हो तो उसे निकालडालो अर्थात् रूप में से उस लघु को कम करदो तो शेष शुद्ध रूप होगा॥

इसरूप को प्रथम तुम अपने पहिले पत्र पर प्रथम पंक्ति के नीचे दूसरी पंक्ति में लिखदो और फिर दूसरे नियम के अनुसार इस रूप में भी जो सब से पहिला गुरु है उसके पीछे भी लघु बढ़ाकर तीसरे नियमके अनुसार मात्रा बृद्धि की अशुद्धता को दूर कर दो। इस नये शुद्धरूप को अपने पहिलेपत्र की तीसरी पांक्ति में रखकर

फिर दूसरे तीसरे नियमों की सहायता से चौथे पांचवें आदि रूपों के निकालने को कटिबद्ध होओ और जिस समय सम्पूर्ण गुरु रूप से निश्शेष होजावें तो समझ लो कि हमारा प्रस्तार पूरा होगया ॥

(सूचना) प्रस्तार के रूपको तीसरे नियम के अनुसार शुद्ध करके देखो कि उसमें कहीं प्रारम्भ से दो या तीन आदि लघुगुरु के पहिले इकट्ठे तो नहीं आगये—यदि आगये हों तो गुरु के पहिले के दो लघुओं के स्थान में एक गुरु लिख दो। परन्तु ध्यान रक्खो कि यदि ऐसा करने से कोई पूर्वोक्त रूप आजाताहो तो उसको वैसाही रहने दो ॥

उदाहरण

मानलो तुम्हे टगण अर्थात् ६ मात्रा के गण का प्रस्ताव दिखाना है इसमें ३ गुरु (SSS) जोकि ६ मात्राओं के बराबर है पहिली पंक्ति में

रक्खो-इसके उपरान्त सबसे पहिले गुरु के पीछे एक लघु बढ़ाओ तो यह (ऽ।ऽऽ) रूप होगा ॥

अब जोकि सबसे पहिले गुरु है उसको लघु कर दो तो यह (।।ऽऽ) दूसरा शुद्ध रूप होगा (यहांपर प्रारम्भ से दो लघु इकट्ठे गुरु के पहिले आगये हैं इनके स्थान में नियम के अनुसार एक गुरु होना चाहिये परन्तु ऐसा करने से पहिला रूप होजायगा इसलिये इसको ऐसाही रहनेदो)

इस शुद्ध रूप (।।ऽऽ) के सबसे पहिले गुरु के पीछे लघु बढ़ाया तो यह (।।ऽ।ऽ) रूप हुआ इसमें जो सबसे पहिले लघु है उसको गिरादो तो यह (।ऽ।ऽ) तीसरा शुद्ध रूप हुआ ॥

इससे चौथे और चौथे से पांचवे आदि रूपों को पूर्वोक्त नियमोंके अनुसार निकालतेजाओ-अन्त के रूप में सब लघुही लघु आजावेंगे-इसी प्रकार और गणों का भी जानो ॥

निम्न लिखित चित्र में सब गणोंके सब रूपों को देखो क्रमशः लिखे हैं ॥

नाम गण	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
टगण	SSS	IISS	ISIS	SIIS	IIIIS	ISSI	SISI	IIISI	SSII	IISII	ISIII	SIIII	IIIIII
ठगण	ISS	SIS	IIIS	SSI	IISI	ISII	SIII	IIIII					
डगण	SS	IIS	ISI	SII	IIII								
ढगण	IS	SI	III										
णगण	S	II											

मात्राओं की संख्या जानकर बिना प्रस्तार किये रूपों की संख्या जानना

मात्राओं की संख्याके तुल्य एकादि अंक स्थापन करके पहिले एक व दोके ऊपर १,२ लिखो फिर पिछले शेष अंको में से प्रत्येक के

ऊपर उससे पहिलेके दो २ अंकों के ऊपर के अंकों का योग लिखते जाओ तो अन्तिम अंक के ऊपर भेदों की संख्या होगी ॥

निम्नलिखित उदाहरण टगण के भेदों की संख्या को देखो

भेदोंकीसंख्या	१	२	३	५	८	१३
एकादि अंक	१	२	३	४	५	६

वर्ण प्रस्तार

१---सबसे पहिले पहिली पंक्तिमें सब गुरुही गुरु लिखो।

२---मात्रा प्रस्तार के अनुसार प्रत्येक रूपके सबसे पहिले गुरुके पीछे एक लघु बढ़ाते जाओ।

३---अशुद्ध रूपके प्रथम वर्णकोचाहे गुरुहो अथवा लघु गिरातेजाओ शेष शुद्धरूप बचता रहेगा।

४---नयेशुद्ध रूपके प्रथमके एकादि लघुओंको गुरु करतेजाओ परन्तु इस बातका ध्यानरक्खो कि ऐसा करनेसे कोई पूर्वोक्त रूपतो नहीं होजाता यदि होजाताहो तो उसको वैसाही रहनेदो॥

नीचेलिखेहुये६वर्णकेप्रस्तारकोदेखो।

संख्या	रूप	संख्या	रूप	संख्या	रूप	संख्या	रूप
१	SSSSSS	१७	SSSS|S	३३	SSSSS|	४९	SSSS||
२	|SSSSS	१८	|SSS|S	३४	|SSSS|	५०	|SSS||
३	S|SSSS	१९	S|SS|S	३५	S|SSS|	५१	S|SS||
४	||SSSS	२०	||SS|S	३६	||SSS|	५२	||SS||
५	SS|SSS	२१	SS|S|S	३७	SS|SS|	५३	SS|S||
६	|S|SSS	२२	|S|S|S	३८	|S|SS|	५४	|S|S||
७	S||SSS	२३	S||S|S	३९	S||SS|	५५	S||S||
८	|||SSS	२४	|||S|S	४०	|||SS|	५६	|||S||
९	SSS|SS	२५	SSS||S	४१	SSS|S|	५७	SSS|||

वर्णोंकी संख्या जानकर बिना प्रस्तार किये रूपोंकी संख्या जानना

पहिले वर्णोंकी संख्या तक एक आदि गिनती के अंक लिखदो और इसके उपरांत पहिले १ के अंक के ऊपर २ लिखदो फिर शेष अंकोंमें से प्रत्येक के ऊपर उससे पूर्व के अंकके ऊपर लिखेहुए अंक का दूना लिखते जाओ तो सबसे पिछले अंकके ऊपर भेदोंकी संख्या होगी ॥

निम्नलिखित उदाहरणमें ६ वर्णके भेदोंकी संख्याको देखो ॥

भेदोंकी संख्या	२	४	८	१६	३२	६४
एकआदि अंक	१	२	३	४	५	६

॥ उद्दिष्टके विषयमें ॥ मात्रोद्दिष्ट ॥

ज्ञात रूपको स्थापितकर लघुके केवल ऊपरही और गुरुके ऊपर और नीचे दोनों १, २, ३, ५, ८ १३, आदि (एक और दोको छोड़ शेष प्रत्येक अपने

सेपहिलेके दो अंकों के योगके तुल्य होगा)अंकघर
गुरुके केवल ऊपरके अंकोंके योगको अन्तिम अंक
में घटादो शेषरूपके स्थानकी संख्या होगी ॥जैसे
१ ३ ५ १३ इसरूपमें एकादि अंक रखनेके उपरांत१

ऽ । ऽ । और ५ (जो गुरुओंके ऊपरकेअंकहैं)
२ ८

केयोग ६ को १३ में घटाओ तो शेष ७रहे यह ज्ञात
रूपकेस्थानकी संख्याहै अर्थात्ज्ञातरूप७सातवां है

वर्णोद्दिष्ट

इसरूपको स्थापितकर उसके ऊपर एकादि
द्विगुणोत्तर अंक लिखदो (१, २, ४, ८, आदि)
फिर लघुओंके ऊपरके अंकोंको जोड़कर योग
फलमें एक और जोड़दो तो ज्ञातरूपके स्थानकी
संख्या निकल आवैगी ॥

अथवा अन्तिम अंकके दूनेमें गुरुओंके ऊपरके
अंकोंके योगको घटादो तोभी ज्ञात स्थानकी
संख्या शेष रहजावेगी जैसे इस १ २ ४ ८ १६ ३२
। ऽ ऽ । । ऽ

रूपमें लघुओंके ऊपरके अंकोंका योग २५ है इस में एक और जोड़ातो २६ रूपके स्थानकी संख्या हुई अथवा अन्तिम अंक ३२ के दूने ६४ में गुरुओं के ऊपरके अंकोंके योग ३८ को घटाओ तोभी २६ उस रूपके स्थानकी संख्या शेष रही ॥

॥ नष्ट ॥ मात्रानष्ट ॥

मात्राओंके अनुसार रूपके भेदोंकी संख्याओं को एकादि क्रमसे लिखदो फिर उक्त अंकोंमें से प्रत्येकके नीचे एक २ अंक लिखदो इसके उपरांत जो रूपकि निकालनाहै उसके स्थानकी संख्याको अन्तिम अंकमेंसे घटादो जो शेषरहे उसमें देखो कि भेदोंकी संख्या बतलानेवाले अंकोंमें से बड़ेसे बड़ा कौनअंक घट सक्ताहै जो घटसके उसको घटादो शेषमें फिर देखो कि कौन अंक घट सक्ताहै जो घटसके उसे फिर घटादो और ऐसाही करतेजाओ जबतक कि कुछ शेष न रहै अब जो जो अंक घटेहों उनको उनके पीछेके अंकके

नीचेके दोदो लघुओंको जोड़कर एक एक गुरु लिखदो और इमसे जो बचे उनको लघुही रहने दो तो इच्छित रूप निकल आवेगा जैसे टगणका सातवांरूप लानेके लिये १ २ ३ ५ ८ १३

को क्रमसे लिखा ॥ | | | | | |
और प्रत्येक के नीचे └─┘ └─┘
एक २ लघुलिखदिया ऽ | ऽ |

अब आन्तिम अंक १३ में पूंछे हुए रूपके स्थानकी संख्या ७ को घटाया तो ६ शेष रहैंगे इसमें ५ घट सक्तेहैं घटादो । तो एक शेष रहैगा इसमें १ घटसक्ताहै घटादो तो निरशेष होजायगा अरथात् केवल १, ५ घटसके अब इनके व इनके पीछेके अंकों २, ८ के नीचेके दोदो लघुओंके स्थानमें गुरु करदिया तो इच्छित रूप आगया ॥

वर्णनष्ट

यदि पूछेहुये भेदकी संख्या सगहै तो पहिले

एक लघु धरदो फिर आधा करके देखो समहै या विषम—यदि समहो तो लघु लिखकर आधा करो और जो विषमहो तो गुरुलिखकर विषम अंकमें एक जोड़कर आधा करो और ऐसाही उस समय तक करतेजाओ जबतक अंक आधा होते २ एक तक न पहुँचजाय । एकपर पहुंचनेपरभी अगर वर्णोंकी संख्यामें कुछ कमीरहै तो शेष सब गुरु लिखदो जैसे यदि ६ वर्णका २८ वां रूप लानाहै तो देखो २८ समहै इसलिये प्रथम । । ऽ । । ऽ लघु लिखदो फिर आधा करनेसे १४ आया यह भी समहै फिर लघु लिखो फिर आधा करनेसे ७ आया यह विषमहै इस कारण अब गुरुलिखो और एक जोड़कर आधाकरो तो चार आया यह समहै लघु लिखो इसका आधा दोभी समहै फिर लघु लिखो आधा एक बिषमहै गुरुलिखो यही २८ वां रूपहै ॥

॥ मेरुके बिषयमें ॥ मात्रामेरु ॥

पहिली पंक्ति में दोवर्ग बनाओ दूसरी में

तीन तीसरीमें फिर तीन चौथीमें चार पांचवीं में फिर चार इत्यादि—उतनी पंक्ति स्थापनकरो जितनीकी मात्राओंकी संख्याहै तोयहीमेरु होगा।

मेरुभरनेकी रीति

बांईओरसे प्रारम्भ करके प्रथम स्थानके वर्गों में एक मात्रा द्विमात्रा आदिको लघुगुरुके रूपमें लिखदो। दूसरे स्थानके वर्गोंमें ऊपरसे नीचे तक एकही एक लिखदो॥ अब देखो कि पहिली पंक्ति को छोड़कर दूसरी तीसरी आदि में तीन तीन चार चार आदि वर्गोंकी दुहरीपंक्तियांहैं। इनमेंसे प्रतिदो के अन्तके वर्गोंमें ऊपरसे नीचेतक १, २, व १, ३ व १, ४, के अंकोंको क्रमशः लिखो और दूसरी पंक्ति के वर्गों मेंसे प्रत्येकमें उसके ऊपरके वर्गके अंक और उसके बाईंओर के वर्ग के अंकके योगको लिखो जिसका कि ऊपरवाला वर्ग मापकहै। शेष वर्गों में से प्रत्येक में उसके ऊपर के वर्ग और उस ऊपरवाले के ऊपर बांई ओर कर्णागार दिशा के वर्ग के अंकों का जोड़ लिखदो॥

।	१					
ऽ	१	१				
।ऽ	१	२				
ऽऽ	१	३	१			
।ऽऽ	१	४	३			
ऽऽऽ	१	५	६	१		
।ऽऽऽ	१	६	१०	४		
ऽऽऽऽ	१	७	१५	१०	१	
।ऽऽऽऽ	१	८	२१	२०	५	
ऽऽऽऽऽ	१	९	२८	३५	१५	१
।ऽऽऽऽऽ	१	१०	३६	५६	३५	६

वर्ण मेरु

मेरु के बनाने की रीति।

पहिली पंक्ति में तीनि दूसरी में चार तीसरी में पांच आदि वर्ग क्रमशः एक की वृद्धि से बनाओ जितनेवर्णहों उतनीहीपंक्ति स्थापन करना चाहिये

मात्रा पताकाके भरनेकी रीति ।

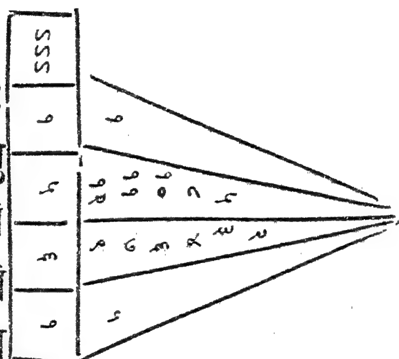
पहिले दण्ड को मेरु की सहायतासे निर्माण करलो । इसके उपरान्त १, २, ३, ५, ८, आदि (एक दो को छोड़ प्रति उत्तर अंक दो पूर्वांकों के योग के तुल्य है) अंको को किसी अन्य स्थान पर मात्राओं की संख्या के तुल्य स्थानों तक रक्खो अर्थात् जो तीन मात्राके रूपों की पताकाहै तो तीन अंक १, २, ३, लिखे जायँगे।यदि चार मात्रा हैं तो १, २, ३, ५, इसी प्रकार और भी जानो ।

अब पताकाके सबसे ऊपरवाले खंडमें एकलिखो यह एक उसरूपको बतलाताहै जिसमें सब लघुही लघुहैं (तुम जानतेहो कि यह अन्तिम रूपहोता है) इसके नीचे दूसरेभागमें १, २, ३, ५, आदिमें से प्रतिदोके योगको अन्तिम अंकमेंसे क्रमपूर्वक पृथक्२ घटानेमे जो अंक बचें उनको लिखो । यह दो गुरु और शेषलघु लघुवाले रूपोंके स्थानके अंकहोंगे ।

इसी प्रकार तीन २ चार २ के योगको उसी अन्तिम अंकमें घटानेसे क्रमशः पताकाके चौथे पांचवें

आदि खंडोंके अंक ज्ञातहोंगे । सबसे अन्तके खंड में एक रक्खो (यह उसरूप को बतलाताहै जिसमे सबगुरुही गुरुहैं) परन्तु ध्यानरहै कि यदि कोई अंक पहिले घटाया जाचुकाहै तो फिर उसेदुबारा न घटाओ ॥

उदाहरण



दंडमें १, ५, ६, १ यह ६ मात्राके समलघु गुरुवालेरूपोंकेबतलाने वालेअंकमेरुसेलियेगये हैं और पताकांकेसबसे ऊपरकेखंडमें सर्वलघुका एकरूप है दूसरे खंडमें १२(१३--१), ११(१३--२) १०(१३--३), ८(१३--५)

रूप भेद	१	२	३	५	८	१३
मात्रायें	१	२	३	४	५	६

५ (१३--८) जो अन्तिमअंकमें १, २, ३, ५ आदि उद्दिष्ट से प्राप्तअंक पृथक् २ घटानेसे मिलते हैं लिखतेहैंयह ऐसे रूपहैंजिनमें १ गुरु और शेष सब

लघुहैंतीसरेभागमें प्रतिदो रूपभेदोंके योग अन्तिम अंकमेंसेपृथक् २ घटानेसे जो शेषरहाहै वहक्रमशः लिखाहै। यह उनभेदोंको बतलातेहैं जिनमें २ गुरु और शेष लघुहैं। शेषखंडमें सम्पूर्ण गुरुका १ भेदहै (देखो जिनदो अंकोंको योगके तुल्य अंक पहिले घटाचुकेहैं उनके योगको छोड़ दियाहै वह (१+२) (२+३) (३+५) आदिहैं)

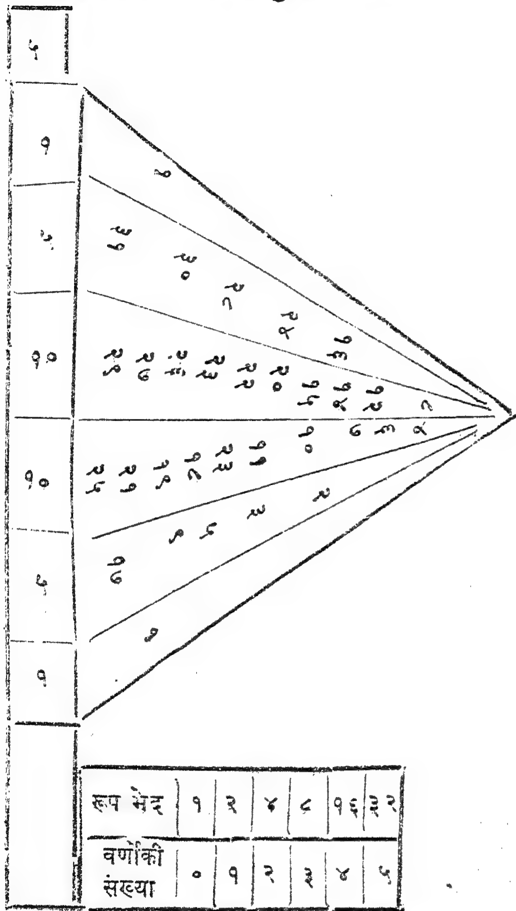
१३−४ (१+३) =९
१३−६ (१+५) =७
१३−९ (१+८) =४
१३−७ (२+५) =६
१३−१० (२+८) =३
१३−११ (३+८) =२

बरण पताकाके भरनेकीरीति

बर्णमेरु की सहायता से दंड के अंकस्थापन कर पताका आदि अंकके खंडो में एक २ लिखकर शेष खंडों को बर्णोद्दिष्टसे प्राप्त अंकों की सहायता से मात्रापताकाके नियमोंके अनुसार भरदो॥ जैसे

(सूचना) निम्न लिखित पताका में आदि का

१ उस रूप को जिसमें सब लघु हैं और अन्त का
१ उस रूप को जिसमें सब गुरु हैं प्रकाशित करता है ।



रूप भेद	१	२	४	८	१६	३२
वर्णोंकी संख्या	०	१	२	३	४	५

दूसरे खंडके अंक

३२−१ = ३१
३२−२ = ३०
३२−४ = २८
३२−८ = २४
३२−१६ = १६

कुल पांच अंक

तीसरे खंडके अंक

३२−(१+२) = २९
३२−(१+४) = २७
३२−(१+८) = २३
३२−(१+१६) = १५
३२−(२+४) = २६
३२−(२+८) = २२
३२−(२+१६) = १४
३२−(४+८) = २०
३२−(४+१६) = १२
३२−(८+१६) = ८

कुल दस अंक

चौथे खंडके अंक

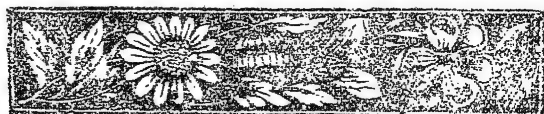
३२−(१+२+४) = २५
३२−(१+२+८) = २१
३२−(१+२+१६) = १३
३२−(१+४+८) = १९
३२−(१+४+१६) = ११
३२−(१+८+१६) = ७
३२−(२+४+८) = १८
३२−(२+४+१६) = १०
३२−(२+८+१६) = ६
३२−(४+८+१६) = ४

कुल दस अंक

पांचवें खंडके अंक

३२−(१+२+४+८) = १७
३२−(१+२+४+१६) = ९
३२−(१+२+८+१६) = ५
३२−(१+४+८+१६) = ३
३२−(२+४+८+१६) = २

कुल पांच अंक



मर्कटीके विषयमें

एकवर्ग अथवा आयतक्षेत्र बनाकर उसकी खड़ी भुजको ६ तुल्यभागों में बांटदो और प्रतिभाग विन्दुसे पड़ी भुजाओंके समानान्तर रेखा खींचदो इसके उपरान्त पड़ी भुजको जितनी मात्राओं अथवा वर्णोंकी मर्कटी बनानाहो उससे १ अधिक भागोंमें विभाजित करो और भाग विन्दुओंसे खड़ी भुजाओंके समानान्तर रेखायें खींचदो ॥

मात्रा मर्कटीके भरनेकी रीति

प्रथम सबसे ऊपरकी पंक्तिके वर्गोंमेंसे पहिलेमें वृत्तका शब्द और फिर १, २, ३, आदि गिनतीके अंक क्रमशः लिखदो दूसरीपंक्तिके प्रथममें भेद और फिर १, २, ३, ५, आदि मात्रोद्दिष्ट से प्राप्त अंकोंको लिखदो तीसरी पंक्तिमें पहिले मात्रा फिर शेषमेंसे प्रत्येकमें उसके ऊपरके दोवर्गोंमें लिखे हुए अंकोंका गुणानफल लिखदो ।

इसके उपरांत छठी पंक्तिमें पहिलेमें लघुदूसरे

में एक लिखकर शेषमेंसे प्रत्येकमें छठी पंक्तिके ज्ञात अंक और उससे पहिलेके अंक और ज्ञात अंकके ठीक ऊपर दूसरी पंक्तिके अंक तीनोंके योग को लिखदो। पांचवीं पंक्तिमें पहिलेमें गुरु दूसरे में शून्य लिखकर शेषमें छठी पंक्तिके अंकोंको एक आदिके क्रमसे लिखदो। चौथी पंक्तिमें पहिले में वर्ण लिखकर शेषमें पांचवीं छठी पंक्तिका योग लिखा जाताहै॥

वृत्तादि	१	२	३	४	५	६	७
भेदाः	१	२	३	५	८	१३	२१
मात्राः	१	४	९	२०	४०	७८	१४७
वर्णाः	१	३	७	१५	३०	५८	१०९
गुरवः	०	१	२	५	१०	२०	३८
लघवः	१	२	५	१०	२०	३८	७१

वर्णमरकटी भरनेकीरीति

पहिली खड़ीपंक्ति वृत्तादि शब्दोंको मात्रा मर्कटीके अनुसार भरदो फिर सबसे ऊपरकी पंक्ति में एकआदि गिनतीके अंक दूसरीमें वर्णादिकसे

प्राप्त भेद अंक भरदो । इसके उपरान्त छटी पंक्ति में पहिले एक लिखकर शेष में से प्रत्येक में भेद के पहिले वृत्त के दूसरे, भेद के दूसरे वृत्त के तीसरे, भेद के तीसरे वृत्त के चौथे इत्यादि वर्णों के गुणन फल को क्रमशः लिखदो । पांचवीं पंक्ति में छटी पंक्ति के अंक ज्यों के त्यों चौथी में छटी के दूने और तीसरी में तीनगुने क्रमशः लिखदो ॥

कलायें	१	२	३	४	५	६
भेद	२	४	८	१६	३२	६४
मात्रा	३	१२	३६	९६	२४०	५७६
वर्ण	२	८	२४	६४	१६०	३८४
गुरु	१	४	१२	३२	८०	१९२
लघु	१	४	१२	३२	८०	१९२

वृत्तभेद

वृत्तोंके अनुसार जो छन्दोंके ३ भेदहोतेहैं वे नीचे लिखेहैं ॥

१—समवृत्त—जिसके चारों चरण तुल्यहोतेहैं ।

कोकारिसकै सहाय बायु उनचासौ डोलैं ।
गर्जैं घन घन घोर मनो दिग्सिंदुर बोलैं ॥
लखि ललात बिललात लोग नहिं कोय खेवैय्या ।
देवल बोल गिरीश घाटपर लाओ नैय्या ॥

नम्बर	अक्षरोंकी पूर्ण संख्या	प्रचलित भेदोंकी संख्या	नाम छन्द	संख्या गुरु लघु की उदाहरण सहित	नाम भेद	उदाहरण
१	२	१	उक्ता	ग	श्री	श्रू ॥ श्रू ॥ श्री ॥ श्री ॥
						मा ॥ ता ॥ मे ॥ री ॥
२	४	४	अत्युक्ता	गग	काम	रामा । श्यामा । नामा । कामा ॥
				लग	मही	हरे । हरे । भजो । भजो ॥
				लल	मधु	शिव । शिव । हरि । हरि ॥
				गल	सार	राम । नाम । यार । सार ॥
३	८	६	मध्या	म	ताली	रट्टैहै । रामैहै । रैनाहो । दीनाहो ॥
				र	मृगी	रामके । श्यामको । पायपै । जायपै ॥

नम्बर	भेदोंकी पूर्ण संख्या	प्रचलित भेदोंकी संख्या	नाम छन्द	संख्या गुरु लघु की उदाहरण सहित	नाम भेद	उदाहरण
४	१६	४	प्रतिष्ठा	य	शशी	मघोनी । मृडानी । जपामी । नमामी ॥
				स	रमण	लगलों । हियलों । प्रियसे । जियसे ॥
				त	पंचाल	नाचन्ति । गायन्ति । दैतालि । बैतालि ॥
				न	कमल	अमल । कमल । सदल । सफल ॥
				गग	तीर्णा	चारोंचर्णा । देखोबर्णा । दीर्घैसबै । जद्वैतद्वै ॥
				रल	धारी	नंदनंद । दुःखद्वंद । काटिझट्ट । नष्टकष्ट ॥
				जग	नगानिका	दरीदरी । दुरेदुरे । हरीहरी । ररररे ॥
				नग	सती	मनबसे । कटिकसे । पटहरी । नरहरी ॥

नम्बर	मे०पू०सं०	प्र०म०पू०सं०	नाम छन्द	म०गु०ल०उ०म०	नाम भेद	उदाहरण
१	३२	४	सुप्रतिष्ठा	मगग	संमोहा	ध्याओ जोरामा । शोभा श्रीधामा ॥ पावो जो कामा । सांची ओवामा ॥
				तगग	हारीत	श्रीश्यामराधे । जीमों अराधे ॥ काटेकुबाधे । हारीतसाधे ॥
				भगग	हंसी	रामहिँगावै । जोमनभावे ॥ सोसबपावे । भौतरिजावे॥
				नलल	यमक	हरिवदन । सुखसदन ॥ हियगगन । नितबसन ॥

नं०	सं०पू०सं०	प्र०सं०पू०सं०	नाम छन्द	सं०गु०अ०ल०सं०	नामभेद	उदाहरण
६	६४	८	गायत्री	मम	शेषराज	मैं होंदासी तेरी। क्यों तू त्यागेमेरी ॥ अर्पादो या मुझे। क्याहूंपूछूंतुझे ॥
				सस	डिल्ल	प्रियचन्द्रकृतं। पुनिहार धृतं ॥ पदवर्णषटं। मनिडीलवटं ॥
				जज	मालती	गुविन्दगुपाल। कृपाल दयाल ॥
				तय	तनुमध्या	होवेप्रभुचेला। लेनाम अकेला ॥ याही जग मेला। है कामसुहेला ॥
				नय	शशिवदना	शुभधुनिकर्णा। षटपद वर्णा ॥

नम्बर	भे०पू०सं०	प्र०भे०पू०सं०	नाम छन्द	सं०गु०ल०उ०सं०	नाम भेद	उदाहरण
						कहकवि हंसा । गति चतुरंसा ॥
				र र	वसुमती	चित्तआशायही । मुक्ति दातासही ॥
						पद्म पा पावहीं । पारभौ जावहीं ॥
				र स	विमोहा	आशदासरही । पांवपाव सही ॥
						योगयुक्तिचही । भक्तिमुक्तिलही ॥
७	१२८	६	उष्णिक	रयग	समानिका	रामरामको गावो । लाभ जन्मकापावो ॥
						और कामको छोवो । पाप आपनेखोवो ॥
				नजल	सुवास	रघुबरतूकहि । सबफलयों लहि ॥

नम्बर	सं० पू० सं०	प्र० सं० पू० सं०	नाम छन्द	सं० प्र० ल० ग० सं०	नाम भेद	उदाहरण
						चलनभलोचहि । जगदुखकोसहि ॥
				नसल	करहंच	फणिलराजादस । वरण इमिसस ॥
						चरणचहुँसंच । कहतकरहंच ॥
				भयग	शीर्षरूप	दासहियथेआई । देसुयशकोगाई ॥
						तत्वयहही जाने । तवगुणहिको ध्याने ॥
				भसग	मदलेखा	पादनप्रतिसोहै । चन्द्रपवनगोहै ॥
						सत्यवर्ण देखा । भाषतमदलेखा ॥
				ननग	मधुमति	अहिरक्षरिके । गुरुपगधरिके ॥

नम्बर	भे० पु० सं०	प्र० भे० पु० सं०	नाम छन्द	सं० ग० ल० उ० सं०	नाम भेद	उदारण
				नयस	सारंगिक	भाषिजेमोहते मुक्तहैं । योंमहालक्ष्मीयुक्तहैं ॥ नरहरिगाधोत्रहिये । सबदुखदूरोरहिये ॥
				मभस	पाईता	तन सुखपूरोलहिये । नहिंकछुकाहूकहिये ॥ गावोसाधोरघुबरको । धावोभाषोगिरधरको ॥
				ननस	कमला	लावोगंगाभरजलको । पावोमांगेशुभफलको ॥ हरिहरिकहिमनसों । सब सुखलहुतनसों ॥
				नसय	बिम्ब	भवदुःखनहिंछनसों । वचनससुझिपनसों ॥ प्रियउरगादिब्यदीजै । वरहिगवहोरिकीजै ॥

नम्बर	म० पू० सं०	प्र० भे० पू० सं०	नाम छंद	सं० ग० ल० उ० सं०	नाम भेद	उदाहरण
						यहि विधिप्रबन्धजो है। भानिकविसुविँचसो है॥
				सजज	तोमर	चहुँभागबागतड़ाग। अब देखियेबड़भाग॥
						फलफूलसोंसंयुक्त। अलियोंरमैजनमुक्त॥
				मसभ	रूपमाली	श्रीराधाकृष्णहै गोविन्दा।
						माधोविष्णुजो है आनन्दा॥
						ताकोध्यावोछोड़ासौफन्दा।
						ऐसे भाषस्याने आछन्दा॥
१०	१०२४	५	पंक्ति	सजजग	संयुक्त	व्रतबाणरावणकीसुन्यो।

नम्बर	भे०पू०सं०	प्र०भे०सं०	नाम छंद	सं०ग०छ०उ०सं०	नाम भेद	उदाहरण
						सिरराजमंडलमेंधुन्यो ॥
						जगदीशअम्बकृपाकरो ।
						विपरीत बात सबैहरो ॥
				भमसग	चंपक माला	आदिनिशेशं पृथ्वीनिवासं ।
						वायुसुआते हार प्रकाशं ॥
						पादइदं दशवर्णवसन्ते ।
						चम्पकमालाछन्दलसन्ते ॥
				भगभग	सारवती याहरनी	मोहिंचलोवन संगलिये ।

[illegible]	सं०पू०सं०	स०म०सं०	नाम छन्द	सं०गु०छ०व०सं०	नामभेद	उदाहरण
						पुत्रतुम्हैं हमदेखिजिये ॥
						औधपुरी महँ गाजपरै ।
						कै अबराज भरत्थकरै ॥
				तयभग	सुखमा	सीतारमनासेवोत्तरना ।
						मीतासरना मे ओहरना ॥
						ऐसेप्रभुको जीसेकहिये ।
					अमृत	ऊँचपदको नीके लहिये ॥
				नजनग	गत	नितप्रतिपंथहिचलिये ।

नम्बर	मे०पु०सं०	प्र०मे०सं०	नाम छन्द	सं०गु०ल०उ०म०	नाम भेद	उदाहरण
						जहँतहँगंगलचारठये ॥ वर्णतहैंकविराज बने । तन मन बुद्धि बिवेक सने ॥
				रजरलग	श्येनिका	रामनाम नेम बांधि गाइये । ब्रह्म लोक शोक मोक्ष पाइये ॥ और नाहि है उपाय जानिये । चित्त मांहि प्रेम साजि मानिये ॥
				ततजगग	इन्द्रवज्रा	भागीरथी रूप अनूप कारी ।

नम्बर	प्र०पू०सं०	प्र०भे०पू०सं०	नाम छन्द	सं०गु०ल०ल०प्र०	नामभेद	उदाहरण
						चन्द्राननी लोचन कंज धारी ॥ बानी बरबानी मुख तत्व शोध्यो । रामानुजै आनि प्रमोद बोध्यो ॥
१२	४०९६	१	जगती	यययय	भुजंग प्रयात	नमामीश मीशान निर्वाणरूपं । विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ॥ अजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं । चिदाकाश माकाश वासंभजेहं ॥
				ससस	तोटक	अब सीय लिये बिनहौं नटरौं ।

नम्बर	मं० पु० सं०	प्र० मं० सं०	नाम छन्द	सं० गु० ल० ड० म०	नामभेद	उदाहरण
						कहुं जाहुं न तौं लगि नेम धरौं ॥
						जब लौं न सुनो अपने जनको ।
						अति आरत शब्द हते तन को ॥
				रररर	लक्ष्मीधर याखग्वि-वणी	राम आगे चले मध्य सीता चली ।
						बन्धु पाछे भये साम सोभे भली ॥
						देखि देही सबै कोटि धाकै मनो ।
						जीव जीवेशके बीच माया मनो ॥
				ततत	सारंग	दीर्घकपश्चात संकाहि त्रैधार ।

नम्बर	सं०पू०सं०	प्र०भे०सं०	नाम छन्द	सं०गु०ल०उ०म०	नाम भेद	उदाहरण
						अंते चगो ह्रस्व वर्णोति संचार ॥
						तुर्य प्रबन्धेह युक्तोपि विख्यात ।
						तत्रैवजानामि सारंग सज्ञात ॥
				जजजज	मोतीदाम	गये तहँ राम जहां निज मात ।
						कही यह बात कि हौं बन जात ॥
						कछू जनि जो दुख पावहु माय ।
						सोदेहुअशीषमिलौं फिरि आय ॥
				भभभभ	मोदक	काहु कहूं शर आसर मारिय ।

नम्बर	भेदोंकी पूर्ण संख्या	प्रचलित भेदोंकी संख्या	नाम छन्द	संख्या गुरु लघु की उदाहरण सहित	नामभेद	उदाहरण
१३	८१९२	४	अतिजगती	सजससग	कलहंस	ऋषि नारि सूंघि शिर गोद धरी ॥ बहु अंग राग अँग अंगरये । बहु भांति ताहि उपदेश दये ॥ अरिकाज लाज तजिकै उठिधायो । धिक तोहिं गोहिं समुझावन आयो । तजि राम नाम यह बोल उचाखो । शिरमांझ लात पग लागत माखो ॥
				ससससग	तारक	जब अनिभई सबको दुचिताई ।

नम्बर	भेदोंकी पूर्ण संख्या	प्रचलित भेदोंकी संख्या	नाम छन्द	संख्या गुरु लघु की उदाहरण सहित	नामभेद	उदाहरण
						कहि केशव काहु सु मेटि न जाई ॥
						सिय संगलिये ऋषि की तिय आई ।
						यक राजकुमार महा सुखदाई ॥
				भनभजल	पंकज	सूरज चरण बिभीषणके अति ।
					वाटिका	आपुहि भरत परवारि महामति ॥
						दुन्दुभि धुनि करिकै वहु सेवन ।
				नजनन		पुष्प वरषि हर्षे दिवि देवन ॥
१४	१६३८४	४	कुकरी	गल	पद्धटिका	जग जिनको मन तव चरण लीन ।

नम्बर	मत्ताओंकी पूर्ण संख्या	प्रचलित मत्ताओंकी संख्या	नाम छन्द	संख्या गुरु लघु की उदाहरण सहित	नामभेद	उदाहरण
						तन तिनको स्मृत नहिं करत छीन ॥
						तिन क्षणही क्षण दुख दमन होत ।
						हिय धरते अतिहि अनंद उदोत ॥
				सससस लल	मनोरमा	सुनिये कुल भूषण देव बिदूषण ।
						बहु आजि बिराजनि के तुम पूषण ॥
						भव भूपजे चारिपदारथ साधत ।
						तिनको कबहूँ नहिं बाधक बाधत ॥
				तभजज गग	बसन्त तिलक	श्री रामचन्द्र यह सन्तत शुद्ध सीता ।

नम्बर	भ०पू०सं०	प्र०भे०पू०सं०	नाम छन्द	सं०गु०छ०उ०स०	नाम भेद	उदारण
१९	३२७६८	६	कलिताक्षरी	रजरजर	चामर	ब्रह्मादि देव सब गावत शुभ्र गीता ॥ ह्वजै कृपाल गहि जय जनकात्म जाया । जोगीश ईश तुमहौ यहि योग माया ॥ आ समुद्र के क्षितीश और जातको गनै । रात भौन भोजको सबैजने गयेबनै ॥ भांति २ अन्नपान व्यञ्जनादि जेंवहीं । देत नारि गारि पूरि भूरि भूरि भेवहीं ॥
				भजसनर	निशिपाल	वानर न जानु सुर जानु शुभगाथ हैं ।

नम्बर	भेदोंकी पूर्ण संख्या	प्रचलित भेदोंकी संख्या	नाम छन्द	संख्या गुरु लघु की उदाहरण सहित	नाम भेद	उदाहरण
						मानुष न जानु रघुनाथ रघुनाथ हैं ॥
						जानकिहिं देहु करि नेहु कुल देहुसों ।
						आजरण साजु पुनि गाजु हंसतेहु सों ॥
				सजजभर	मनहंस	पिय वन्हि वायु सुधासिमरं सुगधा रही ।
						पद अन्त अन्तनि गुरु व यक उचारही ॥
						लहि पक्ष अक्षर चरण २ पर मानहीं ।
						मन हंस छन्द मिदं फणीन्द्र वखानहीं ॥
				ननमयय	मालनी	प्रशमित रज शजै हर्ष वर्षा सैनसे ।

नम्बर	मं०पू०सं०	प्र०भ०पू०सं०	नाम छन्द	स०गु०छ०ड०म०	नाम भेद	उदाहरण
				ननननस	शरभ	बिरल जटन साखी स्वर्नदी कूल कैसे ॥ जगमग दर्शायी शूरके अंशु ऐसे । स्वण नरक हंता नाम श्रीराम कैसे ॥ कमल नयन घन तनवर वयना । त्रिभुवन सुखदातिलक अहि शयना ॥ बिनय सुनहु समझहु मन अपनो । हरहु सकल दुःखजनतनखपनो ॥
				ममममग	सारंगिक	श्रीमाधो बिष्णाराधाकृष्णगोबिन्दागोपाला ।

नम्बर	मं०पु०सं०	प्र०मे०पु०सं०	नाम छन्द	सं०गु०ल०उ०सं०	नाम भेद	उदाहरण
						कालिन्दीकूलानाचे लीलाकेशीकंशाकाला ॥ गोपी कोमोहीभाषे योंही केशो कीन्हांछैया । मैंहूंगी तेरी देखो हंसी राखो गोही कन्हैया ॥
१६	६५५३६	३	अष्टि	जरजर जग	नाराच	रची विरंचि बासती निथम्भ राजिकाभली । जहां तहां बिछावने बने घने थली थली ॥ वितानश्वेत श्याम पीतलाल नीलकारगे । मनो दुहूं दिशानि के समान बिम्बसे जगे ॥
				भभभभभग	नील	पूरब रामहि मध्यदिवाकर चारु लसै ।

नम्बर	सं०पू०म०	प्र०सं०पू०सं०	नाम छन्द	सं०गु०ल०उ०ग०	नाम भेद	उदाहरण
						लोग बहोरि विशेष विशुद्ध सुअन्त बखै ॥
						षोड़स अक्षर भांति अहै प्रतिपाद गथै ।
						पन्नग नायक नीकि प्रबन्ध मिदंसु कथै ॥
				रजरज	चंचला	रामचन्द्र धामते चले सुने जवै नृपाल ।
				रल		बातको कहै सुनै सु ह्वै गये महाविहाल ॥
						ब्रह्मरन्ध्र फोरि जीव यों मिलो बिलोकिजाइ ।
				जसजस		गेहछूरि ज्यों चकोर चन्द्र मैं मिलै उड़ाइ ॥
१७	१३१०७२	२	अत्यष्टि	यलग	पृथ्वी	रमेश रघुनाथको सुमिरि चित्तदेके अभी ।

न०	म०पु०सं०	प्र०मं०पु०सं०	नाम छन्द	सं०ग०ल०व०म०	नामभेद	उदाहरण
						महेश अहि नार दादिकर जोरि पावें नभी ॥
						सुरेश महिमा अपार मन बांधि धावे सभी ।
						कहो किमि जु वेद आप गुनगाय गावें कभी॥
				नसजस यलग.	मालाधरं	भुजंग प्रिय रामराम मारुतंच नीरुद्धरं ।
						सुभग पुनिलोग दिव्य सुपदातं भ्राजद्धरं ॥
						चतुरच प्रबन्ध शुद्ध ललिते न बिश्रितकरं ।
						सुकबिन वदन्ति चारु सुखदेह मालाधरं ॥
				यमनस भलग	शिखरनी	कहे प्यारी तोंपै कमल बिजना शीतल झल्दूं ।

सं०	मा०पू०सं०	प्र०पू०सं०	नाम छंद	सं०ग०ल०छ०म०	नामभेद	उदाहरण
						लगै सीरी २ पवन तनको आलस मिटै ॥
						कहे लैके अंक चरण प्रियके जावकरचे ।
						मलूं जैसे २ सुखदकर भोरू तुहि जचे ॥
१८	४४ : ३९७	२	बुद्धि	यगण यगण	महामोद कारी	हरे राम देवेश हे कृष्ण माधो मुकुंदा मुरारी ।
						दयासिंधुदामोदराकंसकेशीबिदारयोकुचारी॥
						करोगे सदादासकोजानिकैप्रेमकामाउचारी ।
						करोहेकृपालाजकोमानिकद्रोपदीज्योंपुकारी॥
				रसर जभर	चर्चरी	मत्तदन्ति अमत्तह्वै गये देखिदेखिनगज्जहीं ।

नम्बर	सं०पू०सं०	प्र०भे०सं०	नाम छन्द	सं०गु०ल०उ०स०	नाम भेद	उदाहरण
१९	५२४२८८	२	अतिधृति	मसजस ततग	शार्दूल विक्रीड़ित	ठौर२ सुदेशकेशवदुन्दभी नहिं बज्जहीं ॥ डारि२हथ्यार शूरज जीवलै लय भज्जहीं । काटिकै तन त्रानये कहि नारि बेषनसज्जहीं ॥ सीताशोभनव्याहउत्सवसभासंभारसंभावना॥ तत्तत्कार्य्य समग्र व्यग्रमिथिला बासी जना शोभना ॥ राजाराजपुरोहितादिसुहृदोमंत्रीमहामंत्रदा । नानादेशसमागतानृपगणापूज्यापरासर्वदा॥

नम्बर	सं० पू० सं०	प्र० सं० पू० सं०	नाम छन्द	सं० गु० छ० उ० स०	नाम भेद	उदाहरण
२०	१०४८५७६	२	कृति	ननन जननल	चंद्रमाला	रघुबर नर हरि भजिये तजि सब घर पुर। चरण शरण गहि रहिये तिहि छबि रखिउर ॥ जगत जनित भयमिटिहैं यह समझहु लखि। जनम करम सब सरिहैं करहु भगति सखि ॥
				सजजभ रसलग	गीत	भजुरामचंद्र दिनेशदानवदैत्यबंशनिकंदनम्। रघुनंदआनंदकंदकौशलचंद्रभूपतिनन्दनम्॥ जेहिआदिदेवमहेशसेवतनारदादिकध्यावहीं धरिध्यानयोगसमाधिजाकरपारकोउनपावहीं

नम्बर	सं०पू०सं०	प्र०अ०पू०सं०	प्रकृति नाम छन्द	सं०गु०ल०उ०अ०	नाम छन्द	उदारण
२१	२०९७१५२	१	प्रकृति	मरभन ययय	स्रगधरा	प्राणाघातान्निवृत्तिःपरधन हरणं संयमः सत्यवाक्यं । कालेशक्त्याप्रदानंयुवति जनकथामूकभावः परेषाम ॥ तृष्णास्त्रोतोविभङ्गोगुरुषचविनयःसर्व भूतानुकम्पा । सामान्यःसर्वशास्त्रेष्वनुपहत विधि श्रेयसामेषपंथः ॥

नम्बर	भेदोंकी पूर्ण संख्या	प्रचलित भेदोंकी संख्या	नाम छन्द	संख्या गुरु लघु की उदाहरण सहित	नाम भेद	उदाहरण
२२	४१९४३०४	३	आकृति	भभभभ भभभग	मदिरा सवैया	आवत मोहन गाय चरावत गोपिन के मन भावत हैं। गोरज छाय रही तनमें कर फूल उछालत आवत हैं॥ या छवि को कहु कौन कहै निगमागम पार न पावत हैं। भाग बड़े बृज बासिनके जिनआपनसाथ खिलावतहैं॥
२३	८३८८६०८	२	विकृति	भभगभ गभभगग	मालती सवैया	तेरह मंडल मंडित भूतल भूपति जो क्रम ही क्रम साधै। १ कैसेहु ताकहँ शत्रुन मित्रसों केशवदास उदास न बाधै॥ २ विग्रह संधि

नम्बर	मे० पू० सं०	प्र० भ० पू० सं०	नाम छन्द	स० गु० रु० ल० स०	नाम भेद	उदाहरण
						नदानानि सिन्धु लिलेचहुँ ओरन तौसुखसो वै । ४ शत्रु समीप परेत्यहि मित्रसे तासुपरे जो उदास कै जोवै ॥ ३
				जजज जजज जलग	सुमुखी	गहो पदराम सुथान लहो मनमें यह बात जपो सुखसे । उठो अतिभोर तजो अलसै करि पूजन यों भजिहो दुखसे ॥ करो नित याद जु पाठ पठो परि पूरन ग्रंथ करो सुखसे। धरोमन धीर न खेल लगो गुरु के समुहे जु

नम्बर	मे०पू०सं०	प्र०मे०सं०	नाम छन्द	सं०गु०ल०उ०स०	नामभेद	उदाहरण
२४	१६७७७२१६	४	सत्कृति	जजजज जजजय	वाम	रहो रुख से ॥ परी जब घोरपुकार भले दिविदेवन राव न आनि सतायो । करे अग्रु आसुर जेठतवै गहिसागर छींरसुजाय जमायो ॥ भईगगना महआइ अकाजकरोमतिशोचसवैसुनिपायो। धरौ जग रूप जोमानुष को घरमें अवधेश रह्यौ यश छायो ॥
				ससससस ससससस	गाथवी सवैया विजय छन्द	सब क्षत्रिन आददै काहू छुईन छुये विजना

नम्बर	मं०पु०सं०	प्र०भे०सं०	नाम छन्द	सं०गु०ल०ऊ०भ०	नाम भेद	उदाहरण
						दिक बातउगै। न घटै न बढ़ै निशिबासर के- शव लोकन कोतम तेज भगै॥ सब भूषण भूषित होत नहीं मदमत गजादि मखी न लगै। जलहू थलहू परि पूरणसे निमि केकुल अद्भुत जोति जगै॥
				ररगर ररगर	गंगाजल सवैया मत्तमातंग लीलाकर- न दंडक	मेघ मन्दाकिनी चारु सौदामिनी रूपरूरे लसैं देहधारीमनो। भूरि भागीरथी भारती हंसजा अंशकेहैं मनो भाग भारे भनो॥ देव राजा

नम्बर	म०पु०सं०	प्र०भं०पु०सं०	नाम छन्द	सं०गु०ल०उ०सं०	नाम भेद	उदाहरण
						लिये देव रानी मनो पुत्र संयुक्त भूलोक में सोहिये । पक्षहू संघसन्ध्या सखी हैं मनो लक्षि येस्वच्छ प्रत्यक्षही मोहिये ॥
				भभभभ भभभभ	किरीट सवैया।	शोभत शुद्ध सुधा धर पष्ट सदाउत कृष्ट सुमंगल मैगन । आज वहोरि छपाकर द्वैयुग द्वादश वर्ण सु चर्ण विशेषन ॥ यों विधि से पद चारि जहां लहि दिव्य गुणज्ञ सवैसुख भेवन । बुद्धि समुद्र कवीश्वर जे इमिछन्द

नम्बर	भेदोंकी पूर्ण संख्या	प्रचलित भेदोंकी संख्या	नाम छन्द	संख्या गुरु लघु की उदाहरण सहित	नामभेद	उदाहरण
२५	३३५५४४३२	१	आकृति	ससससस ससससस गग	सुन्दरी सवैया	किरीट सुनावत देवन ॥ दधि बेचन को तुम आवति होकर होत यहां मगजो यहि आवे । वचि कौन सकै जिन से तुम पूँछहु कोजन चोरन कोनवतावे ॥ झगरो नकरो अगरो नहिं मांगत देहु वही जोइमें मन भावे । नहिं मानहुगे काहि वो तुम लाल छिनै मुरली अरुनाच नचावे॥
२६	६७१०८८६४	१	उत्कृति	ससससस ससससस लल	सुखद सवैया	रघुनाथ अनाथनकेप्रतिपालकघालक दानव

नम्बर	मे०पू०सं०	प्र०मे०पू०सं०	नाम छन्द	सं०गु०क०उ०स०	नाम भेद	उदाहरण
						हैं गन में गिन । वन जाय मुनीश सनाथ किये दुख दूरि भये खल भागिरहो छिन ॥ सुग्रीवँ सखा हित वालि हन्यो हनुमान कियो बर दूत तभीतिन । प्रभु कीमहिमा कहु कौन कहै शरनागत स्वारथ रूप धस्यो जिन॥

॥ इति शुभम् ॥

प्रशंसापत्र।

(१)

मैंने पं० गिरवरसहाय पांड़े की बनाई गिरीश पिंगल को आदि से अन्त तक भलेप्रकार से देखा। निस्सन्देह इसके नियम वा उदाहरण अतिही उत्तम हैं—इससे सर्वसाधारण को बिशेष करके नार्मलस्कूल के बिद्यार्थियों को बहुतही लाभ होसक्ता है—

(हस्ताक्षर) पं० बटुकनाथ द्विवेदी

संस्कृत अध्यापक नार्मलस्कूल

२३—२—०३ इलाहाबाद

(२)

श्री गिरीशपिंगल को देखकर मेराचित्त आह्लादित होगया—वास्तव में इससे सरल सुगम और लाभदायक पुस्तक इस बिषयपर दूसरी नहीं है।

(हस्ताक्षर) पं० मन्नूलाल द्विवेदी

१४—३—०३ छिबरामऊ

(३)

इसमें कोई संदेह नहीं कि पं० गिरवरसहाय ने अपने पिंगल की रचना में बहुत कुछ कर दिखाया है—इतनी छोटी पुस्तक में इतने बिषयों का पूरा बर्णन करना सरवे में सुधा समुद्र भरना है

(हस्ताक्षर) पं० विश्वनाथ शुक्ल

१२—५—०५ संस्कृत अध्यापक हाई स्कूल उन्नाव

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

॥ श्रीगिरीशकृत वज्रांगवज्र ॥



अनंग रूप कोटि से अनूप रूप ओप है ।
अपार शील शांति प्रीय भक्त चित्त चोप है ।
महा कराल कालरूप दैत्य भग्न कोप है ।
गिरीश वज्र वज्र अंग वा मशीन तोप है ॥ १ ॥
दिनै दशा गरीब की व चित्त ताप नाशना ।
महा सुमोद दायका कभूं कुत्रास पासना ।
कुरोग दोष दीह भंजि डारिये कुघासना ।
गिरीश वज्र वज्र अंग पूर दास बासना ॥ २ ॥
अदेव नाशि रक्षिये सुदेव देश धोभले ।
सुकर्म्म पद्म सिंचिके सुधर्म्मगंधदै फले ।
कुमंत्र यंत्र टोटकानि वारिके धरातले ।
गिरीश वज्र वज्र अंग दुःखदीह है दले ॥ ३ ॥
सुवेग विज्जु निंदिये निहारिये जुयागती ।

सराहिये सुचक्रया त्रिशूल ये पशूपती ।
महा कराल कालहू को काल जानु मोमती ।
गिरीश बज्र बज्र अंग योगियो पती यती ॥ ४ ॥
पढ़ै जुयाहि चित्तदे सुभक्त भक्ति पावही ।
अपार पार भौसरी बिनै प्रयास जावही ।
सिराहिं दुःख दोख दीह चित्त चैन चावही ।
गिरीश बज्र बज्र अंग रैन द्योस ध्यावही ॥ ५ ॥

इति श्री गिरीशविरचितबज्रांगबज्र सम्पूर्णम्

॥ शुभमस्तु ॥



"जल्दी मंगालो"

चोरों के अन्धों के लिये चश्मे

☞ पुस्तक मिलने का पता—

पं० चंदीदीनपांडे मैनेजर

श्री गिरीश पुस्तकालय—अकबरपुर

पो० आ० छिबरामऊ

जि० फर्रुखाबाद





छोटलाल ठकुरा
नया बैरहना,
ग्रेंड ट्रन्क रोड,
इलाहाबाद